आत्म-जागृति कार्यालय पुष्प १६

आदर्श साधु

A Picture of An Ideal Sadhu-Saint

आदर्श साधुत्व का सच्चा निवास कहां है
यही दिखाने वाला एक अनुपम पुस्तक.

लेखक: श्री वंसी.

प्रकाशक:-
आत्म जागृति कार्यालय.
C/o श्री जैन गुरूकुल.
ब्यावर।

मूल्य ४ आना

प्रथम आवृति,
प्रत २०००
सँ. १९८६

मुद्रक,
नारायणदास रावत
श्री गणेश प्रिंटिंग प्रेस
ब्यावर।

अर्पण!

जैन समाज के सब

छोटे बड़े

साधु

आत्माओं के

करकमलों में

संग्रह

समर्पण !

—:o:—

दो शब्द।

इस पुस्तक को प्रकाशित करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष होता है, क्योंकि यह पुस्तक अपने ढंग का निराली है।

यों तो जैन-समाज में आदर्श साधु नामक कई पुस्तकें प्रगट हो चुकी हैं, जो प्रायः संकुचित भावों से भरी हुई हैं और ऐसी पुस्तकें पढने से पाठकों का मन ऊब जाता है। उन्हीं पाठकों के लिये यह पुस्तक एक कुसुमित वाटिका है जिसकी सैर कर पाठकों को शान्ति प्राप्त होगी और थकित मन प्रफुल्लित होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

शिष्य-शिष्या, पाट-पाटला, ओगा-पूंजणी और पेटी-भण्डार आदि की उपाधियों से आकुल-व्याकुल होकर और अपने सच्चे ध्येय को भूलकर यत्र-तत्र भटकने वालों के लिये यह पुस्तक वीर-प्रणीत सच्चा मार्गदर्शक सारथी है— साधु-धर्म का सच्चा स्वरुप दिखाने वाली यह आदर्श-साधु गीता है।

इस पुस्तक के गुजराती लेखक श्री 'वंसी' हैं, जिन्होंने थोड़े समय पहिले 'आदर्श-जैन' नामक पुस्तक लिखकर अपनी विद्वता और लेखन-कला का परिचय दिया है। उन्हीं मनोहर लेखक की आकर्षक लेखनी द्वारा लिखीत यह आदर्श-साधु नामकी पुस्तक आपके हाथ में है। वास्तव में, यह अमूल्य पुस्तक लिखकर, श्री 'वंसी' जी ने जैन- साहित्य में वृद्धि की है, जिसके लिये समाज आपका कृतज्ञ है।

हमें पूर्ण आशा है कि प्रत्येक साधु मुनि इस मार्गदर्शक पुस्तक को गुण-ग्राहक बुद्धिसे पढकर सुमार्ग पर अग्रसर होंगे और अपने स्वरुप को पहिचानेंगे। एवमस्तु।

प्रकाशक—

आदर्श-साधु

सिद्धि ! सिद्धि !
परम शान्ति और सिद्धि की शोधमें
जीवन की तेजस्वी मशाल लेकर
आत्मा और परमात्मा का योग साधने
निकले हुए पूज्य साधु !
दुनिया की ऋद्धि को छोड़ कर।
परलोक की सिद्धि के साधक प्रिय साधु !
आपको वन्दन हो ! वन्दन हो !

* * *

पृथ्वि पर का अमृत-बिन्दु।
वही आदर्श साधु ! धन्य हो !

* * *

साधु का दर्शन इतना मधुर हो,
कि दृष्टि जहां पड़े वहीं ठहर जाय।
ऐसा अमृत जिसके प्रति-अङ्ग में भरा हो,
और चेहरा इतना निर्मल व रसिक हो,
कि नेत्र सदैव पिया ही करें।
ऐसा विरल सौन्दर्य वहां लहराता हो,
कि फिर-फिर देखने को चित्त चाहे।
ऐसी रस-भरी मधुरता टपकती हो,
कि उनकी प्रति रेखा पुनः पुनः पढ़ा करें।
चेहरे की रम्यता ही
दर्शक को हर्ष के आँसू से नहलावे।
मुख पर मन्द-मन्द हास्य की
स्वच्छ और अलौकिक सुरखी झलक रही हो।
दर्शक को मोहित कर दे ऐसा
निर्दोष मोहक स्वरूप वहां बैठा हो।
चेहरे में मृदुता व नम्रता के अतिरिक्त
और कुछ न हो।
दिव्य प्रेम के तेज के सिवा वहां
एक भी भाव का दर्शन न हो।
सुन्दर व्यक्तित्व की छाप
यही उनके चेहरे का लक्षण हो।

* * *

आदर्श साधु:

सच्चे साधु के प्रतापी चेहरे पर
इतनी ही भव्यता और सादगी हो।
इस चेहरे में प्रभु का ठण्डा स्पर्श हो
तथा हँस मुख चेहरा और कोमल भाव,
देखने वाले पर जादू करें।
भलमनसाई और भोली उदारता की
गहरी छायाएं वहां पड़ी हों।
ऐसा कोई मधुर चेहरा जो
स्वाभाविक ही सब को शीतलता देवे,
इनकी पवित्र छाया के नीचे बैठते ही
आम्रवृक्ष के समान ठण्डक मिले,
दिल की जलनें शान्त हो जायें,
सँसार के सन्ताप-दुःख भूल जायँ,
और जीवन की सारी थकावट दूर होकर
घबराहट भूल कर अखण्ड तृप्ति का अनुभव हो।
वही परम-सिद्धि के पथ पर
दौड़ता हुआ
विजय का डङ्का बजाने वाला
आदर्श साधु।

* * *

साधने को निकला जो,
वही सच्चा साधु ।

* * *

संसार के क्षेत्रमें
संस्कारी वातावरण जमाकर
साधना के शिखर पर
वेगवती चाल से चढ़ रहा है, वही सच्चा साधु ।
परम तत्व की खोज में
ज्ञान और क्रिया के सहारे
आत्मा के पूर्ण वैभव से दौड़ रहा है,
वही सच्चा साधु ।
साधु याने शान्त-चित्त का साधक,
जिसकी साधना का अन्तिम फल " सिद्ध "
ऐसे सिद्ध बनने को मथन करता है वही साधु ।
भीतर छिपे हुए सिद्धत्व को प्रगटाना चाहे,
और जगत के समस्त तुच्छ जन्जालों को छोड़कर
"साधना" यही जिसका प्रिय मन्त्र है
वही आदर्श साधु ।

* * *

सच्चा साधु,
अपने जीवन की प्रत्येक पल को
'अडिग ध्यान' में रोक कर
निर्वाण की जटिल-समस्याओं को सुलझाता है।
विश्वके समस्त ऊँचे तत्त्वों का शिरोमणि-
मोक्षका जो उग्र उपासक बने,
और साधना के मन्दिर का सच्चा पुजारी बनकर
आत्म-योग की धूनी धधकाता है,
वही आदर्श साधु।

* * *

आत्मदर्शन,
जिसके जीवन का नित्य रटन हो!
रत्नत्रय की आराधना
यही जिसका सच्चा साधन हो,
आत्म भान में जिसका प्रतिदिन 'रमण' हो,
और मुक्ति-स्वातन्त्र्य मन्दिर
जिसका अन्तिम विश्राम स्थल हो,
वही आदर्श साधु।

* * *

'साधुत्व' यह आत्मा की 'उच्च' दशा है,
जीवन का यह वायुयान है।
अनेक जन्मों के गुणाराधन से
प्राप्त हुई यह पवित्र स्थिति है।
मन के शुद्ध अध्यवसायों की यह बहुमूल्य कमाई है।
हृदय की भावनाओं की साक्षात् प्रतिध्वनी है।
आत्मा के अमृत का यह बहता झरना है।
मनुष्य की आत्मिक उन्नति का महा चिन्ह है।
'साधुत्व' यह जीवन का जाज्वल्यमान प्रकाश है।
विषय-तृष्णा की अग्नि से झुलसे हृदय को,
परम शान्ति दायक यह हिम झरना है।
मस्तरामों का मधुर आलाप और
अलख योगियों का वह सुन्दर गान है।
उन्नत भावनाशाली का स्वादिष्ट-भोजन,
केवल एक 'आदर्श-साधुता' है।
आत्मा की परम दशा पर
साधुत्व का वेश विचार-पूर्वक पहना जाय।
आत्मा की मनोहर स्थिति में ही।
साधुत्व का आलोक दिखाई देता है।

* * *

साधुत्व यह असि-धारा व्रत है।
असि की तीव्र धार से जो कभी न विंध सके,
वही साधुत्व को गौरव प्रदान करता है।
'साधुता' यह
जीवन को नव दीक्षा देनेवाला गुलाबी रङ्ग है।
भावना को धार चढ़ाने वाली सुन्दर सान है।
जीवन को गुलाबी रङ्ग न दे सके-वह
'साधुता' सो शब्दों का मिथ्या आडम्बर है।
भावनाओं को उन्नत न बना सके तो
'साधुता' यह लोकरञ्जन का केवल दम्भी खेल है।

* * *

सच्ची साधुता
मनुष्य के मनुष्यत्व को खिलाने वाली
यह काश्मीर की हरीयाली भूमी है।
आत्म-सौन्दर्य के पिपासु 'लालों' का
यही मनोहर सुगन्ध-पूर्ण बगीचा है।
त्याग के चक्रवर्तियों का यह उच्च सिंहासन है।
इन्द्रों के ऐश्वर्य को भी लज्जित करे
ऐसा भव्य और सुन्दर यह जीवन में ही स्वर्ग है
यही आदर्श साधुत्व है

जगत में पूजनीय गिना जाता है।

* * *

संसार के मोह को छोड़कर।
साधना के वस्त्र जो धारण करते हैं
नव दीक्षा के दिवस सिर के बालों का लोच करते हैं।
लोच कर-करके अपने आपको सुनाता है:—
"स्वपर हित साधन के अतिरिक्त
मेरे सिरपर कोई काम ही नहीं है"।
साधना के पथिक का यह प्रथम धर्म है,
संसार के छोड़ते ही
सँसार की वासनाओं को भी तिलाञ्जली देते हैं।
दुनिया के दम्भी दिखावे और
जगत की जहरीली जञ्जालों को वे छोड़ते हैं।
और ?
और 'करेमिभन्ते' का परम 'पच्चक्खाण' लेते हैं।
अर्थात् जीवनभर 'सामायिक' में—
समभाव-पूर्वक रहने की प्रचण्ड प्रतिज्ञा करते हैं।
इस भीषण प्रतिज्ञा का
पल–पल 'जयणा' (जागृति) पूर्वक पालन करके
क्षण–क्षण मन, वचन और काया से
आत्म–विकास में एक–एक कदम आगे बढ़ाते हैं

वही आदर्श साधु ।

* * *

आदर्श साधु क्षमा की जीवित मूर्ति हो,
उसके हृदय में कभी क्रोध का अंश भी न प्रकटे ।
चारों ओर से शान्ति और सरलता टपके,
शान्ति, यद्यपि शीतल, गम्भीर और निस्तब्ध हो,
तथापि उतनी ही प्रबल व उदार हो ।
क्षमा-भावना इतनी विशाल और दिव्य हो,
कि जिसके सन्मुख बाघ और बकरी
बिलाव और मूषक, सर्प और गरुड़,
अपना जातीय स्वभाव छोड़कर आनन्द से क्रीड़ा करें
सरलता की धार
यद्यपि बिल्लौरी कांच के सदृश स्पष्ट हो,
तथापि तोड़ने पर वज्र के समान टूट सके नहीं ।
ऐसी सरलता से
क्षमा के मन्त्र पढ़कर
जगत् में से आत्मक्षोभ का रोग हरनेवाला
महान धन्वन्तरि जो बने, और
जिसके द्वारा आत्मा की खोज करने की क्षुधा जागे,
वही आदर्श साधु ।

* * *

समस्त जीवन जिसका
सम्पूर्ण 'सामायिक'-मय है।
और जो प्रति-क्षण अपनी सामायिक की क्रिया में से
'समता' की शक्ति प्राप्त करता है।
क्रोध पर काबू करने की कला जानता है,
स्व-पर के कल्याण की खोज करता है।
मानसिक और वाचिक दोष हनकर
शून्यता में से चैतन्य में धूँसता जाता है।
सात्विकता की चाँदनी का तेज पीता है।
स्वातन्त्र्य, शोभा और सामर्थ्य को
अधिक से अधिक प्राप्त करके स्फुराता है।
आत्म-स्वराज्य का स्वाद चखता है,
एकाग्रता का ध्यान सीखता है।
क्षमा का वीर मन्त्र पढ़ता है,
और आत्म-बल से
अपनी गुप्त शक्ति को विकसाकर
मोक्ष के दर्शन का रात्रि-दिन इच्छुक है।
सम्पूर्ण स्वावलम्बन साधकर
आत्म संशोधन का मार्ग पकड़ कर
आत्म-विकास साधने के लिये जो उत्सुक रहता है
वही सच्चा 'सामायिक-मय' आदर्श साधु।

***

सोना, चांदी, हीरा, माणिक, मोती, और कङ्कर
जिसकी निस्पृही और निर्मोही आत्मा को
सब समान, पत्थर के तुल्य भासें।
क्योंकि, जिस सम्पत्ति से अनन्तकाल तक
आत्मा को तृप्ति नहीं हुई,
जिस मायावी समृद्धि को प्राप्त करते-करते सदैव
दीनता ही रही-
उसे 'जड़' पर-वस्तु मानकर फेंक दी।
उस पर भावत्यागी को मोह क्या ?

* * *

सुन्दर अप्सरा या 'कुब्जा' दोनों,
जिसकी दृष्टि में केवल काठ की पुतली है।
अग्नि या सर्प का स्पर्श स्वप्न में भी जैसे न करे,
उसी प्रकार भोग की वाञ्छा कभी न स्पर्शे।
यह तो कञ्चन और कामिनी के त्यागी
लोभ या मोह के शस्त्रों से विंधे नहीं।
सम्राट् का सम्राट
और चक्रवर्ती का भी चक्रवर्ती,
ऐसी विपुल आत्म समृद्धि के खजाने का
स्वतन्त्र मालिक, वही आदर्श साधु।

* * *

जो अन्तस्थल से-अन्दर से साधु बना है,
साधु वेश से साधु हृदय को महत् स्थान देवे।
साधुता का गुमान करने की जगह, जिसे
साधुता की भव्यता व पवित्रता के
निर्मल विचार ही हृदय में उमड़े।
ऊपर-ऊपर की 'एक्टिंग'-बाह्याडम्बर छोड़कर
सत्य तत्व को समझने में जो प्रयत्नशील रहे।
भौतिक सुखों के लिये शक्ति का व्यय न करके
आत्मिक सुखकी प्राप्ति में लगावे।
अपनी साधुता को सदेव 'आदर्श' का रङ्ग देवे,
तथापि स्वयं "आदर्श साधु हूं" यह भूले।
और "जनता के बीच में मैं पूज्यपात्र हूं"
इन विचारों की जहां अनुपस्थिति है,
वही आदर्श साधु।

* * *

जिसके पास केवल
चेतन भरी शान्ति का सन्देश है,
और आत्मशान्ति का पान करके
सब को पान कराने की अभिलाषा जिसे,
वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु के रुधिर में
तेजका तन्दुरुस्त तत्व हो,
ताजी जवानी का जोश चमक रहा हो।
कर्तव्य-धर्म की अदम्य उग्रता
जिसके सौम्य चेहरे के नीचे उथल रही हो।
धमाल की अपेक्षा जिसे शान्ति प्यारी,
आग की लपटों की अपेक्षा 'हिम' प्यारा है।
शुष्क शान्ति से चैतन्य प्रिय है,
'बदला लेने' की अपेक्षा प्रेम अधिक प्यारा है।
शान्ति, चैतन्य और प्रेम के पहाड़ पर
चारित्र्य की पताका फहराता है।
मुक्तिमोक्ष के विषम मार्ग पर
अचल श्रद्धा, यही उसका आत्मप्रिय सहचर है।
स्वावलम्बन जिसका श्वास है।
और वैज्ञानिक की भांति जो
अपने विचारों, भावनाओं, व कृत्यों की
निर्मलता का विश्लेषण क्षणक्षण करता है,
और अन्तर के नाद को पहचान कर,
आत्मनिरीक्षण करतेकरते ही
आत्म दर्शन के प्रयत्न में ही
जिसका हिलनाचलना सभी एक ही

आत्मज्ञान की दृष्टि से होता है
वही आदर्श साधु।

* * *

जिसकी आंख में आस्थवाद का तेज है,
स्याद्वाद का विशाल-ज्ञान है।
अनेक रङ्ग के रमणीय चित्र भरे हैं,
मीठी कल्पना का वहां सौन्दर्य,
और भावना की ज्योति जगमगाती है।
ब्रह्मचर्य का पानी उछल रहा है,
निश्चय-बल की तेजस्वी किरणें फूटती हैं,
साधुता के सौम्य और शीतल फव्वारे उड़ते हैं,
भलमनसाई दर्शाती हुई भौंहें ही
जीवन का आधा इतिहास बोलती हैं।
स्वाभिमान की अमीरी जिनके ओष्ठ पर
शान्ति से बैठी है,
जिसकी शान्त प्रभा-युक्त मुद्रा देखते ही
काव्यमय लागणी का प्रवाह छूटता है,
और जिसके पीछे-पीछे सब घूमा करें
ऐसा 'कुछ' वैचित्र्य जिसमें भरा हो।
वही आदर्श साधु।

* * *

वैराग्य सजकर 'निर्मोह' व शीतल न बनकर
जो बहादुर योद्धा बना है।
मर्दानगी का खेल, खेलकर
सतत उद्यम के फल-स्वरूप ही मुक्ति को जो देखता है।
जिसके अखण्ड आत्म-विश्वास के द्वार पर
अनन्त शक्तियें आकर सांकल खटखटाती है।
और विश्व के समुज्वल इतिहास में,
प्रकट या अ-प्रकट रूप से सुन्दर हिस्सा जो देता है,
वही आदर्श साधु!

* * *

बाह्य क्रियाओं को क्रमशः छोड़कर
अन्दर के गर्भ को विद्युत्-शक्ति से जगाता है।
पोथियों के स्थूल-शब्दों की अपेक्षा
भीतर का अर्थ समझने का कष्ट करता है।
बाहर के असरों से दूर होकर
आन्तरिक प्रेरणा से ही क्रिया में प्रवृत होता है,
और अनिश्चितता में से निकलकर
निश्चित 'ध्येय' की तरफ जीवन की नौका मोड़ता है,
वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु के जीवन का लक्ष्य
एक ही अन्तिम मोक्ष है।
'मुक्ति यही उसकी सच्ची दौलत है।

* * *

पन्थ, वाद, गच्छ, और सम्प्रदायें
या तुच्छता के इन सब प्रदनों की
जञ्जीरें और दीवालें तोड़ कर जो
निरन्तर 'दिव्य' और दिव्यता के ही
खुले मैदान में विचरते हैं।
तलहटी के लौकिक मार्ग छोड़कर
चमकते स्वातन्त्र्य-गिरि
शत्रुञ्जय पर चढ़ने में जिसे खूब लज्जत है।
मोहमयी जाल की मछली न बनते हुए
ऊँचे, आकाश में उड़ते हुए पक्षी के समान
पँख जिसने प्राप्त किये हैं,
वही आदर्श साधु।

* * *

जगत जिसको शान्ति का दूत कहता है,
विश्व-प्रेम का सन्देश जो भेजता है।

आत्म नाद को जो निर्बन्ध बहने दे,
और आत्म-तत्व का सच्चा परिचारक हो।
ऐसे सुन्दर-पुरुष का प्रथम दर्शन ही
इतना शान्त और पवित्र प्रतीत हो, कि
चित्त की व्याकुलता शान्त हो जाय।
मनको मधुर समाधि प्राप्त हो,
और इस सुभागी-आत्मा के समक्ष बैठकर
अपने दोषों को सरलता-पूर्वक स्वीकार करके
दोषोंसे हलके हो जाने की स्वभावतः लहर आवें,
वही आदर्श साधु।

* * *

भरपूरता की भयंकर भूख जिसे लगी है,
और अपूर्णता जिसे प्रतिदिन चुभती है।
काफी अवकाश निकालता है,
और इस शक्ति-शाली आध्यात्मिक अवकाश में से
आत्मा को दिव्यता के दर्शन कराता है।
स्वाभाविक और कृत्रिम-जीवन के भेद को पहचान
किसीसे भी बिन्धे बिना
अपने निश्चित लक्ष्य-बिन्दु की ओर
अदम्य उत्साह और अविराम गतिसे
जो आगे बढ़ता है,

वही आदर्श साधु ।

* * *

पापके फल से नहीं,
किन्तु पाप-वृत्ति से ही मुक्ति याचता है ।
दुरङ्गी दुनिया के शब्दों की अपेक्षा
आत्मा की आवाज को मान देकर चलता है।
अपने सबल विचारों में से ही
वातावरण और युग जो प्रकटाता है ।
अपने सरल, श्रद्धामय और निष्पाप जीवन से ही
मानव-समाज को जीवन का सच्चा मर्म बताता है।
हृदयों का परिवर्तन कराता है,
और दीर्घ, सतत व तीव्र मनो मंथन के परिणाम-स्वरू
जगत के सन्मुख जो अलौकिक तत्व की भेंट धरता
वही आदर्श साधु ।

* * *

'जीवन' ही जिसकी परम-प्रिय पुस्तक है,
चारित्र्य ही उसकी पुस्तक का प्रथम ' अक्षर ' है।
' मोक्ष ' ही जिसकी पुस्तक का ' सम्पूर्ण '
और मानवता ही बस ! जीवन की लिपि है
स्व-स्वरूप ध्यान की एकाग्रता

यही उसके जीवन का मोहक रङ्ग है,
ऐसे रंगीले जीवन को पुनः पुनः पढ़ना,
यही जिसकी पवित्र गीता है,
वही आदर्श साधु।

* * *

बुलबुल पक्षी के समान,
आनन्द-हास्य जिसे वर चुका है।
वातावरण को खुशबूदार बना दे,
ऐसे पुष्प-जीवन का जहां परिमल है।
प्रेम, सत्य और सौन्दर्य को
अपना आनन्द में से जो स्फुराता है,
ऊंच और भव्य आनन्द भोगना जानता है।
चेहरा सदैव हास्यमय और मधुर हो,
जिससे व्यग्रता का पाप पलायन करे।
पुण्य शाली की मुख-मुद्रा पर तो
निर्दोष हास्य ही झूले लेता है,
प्रत्येक झूले पर से ही वह
'सिद्धि' की वायु को विशेष स्पर्श करता है।
'हसना और हसाना' यही जिसका पवित्र कर्त्तव्य;
जो स्वयम् ऐसा आनन्द स्वरूप हो।
आनन्द, आनन्द और आनन्द

यही जिसका खाद्य और पेय पदार्थ हो।
जिसके ताजे खुशनुमा चेहरे में से
आनन्द का ही दिव्य सन्देश सुना जावे।
आत्मा की पवित्र लहरें वहीं से उठकर
सहस्रों के अन्तस्तल को पवित्र करें,
और मनुष्य के 'निजानन्द' को प्रकटाने के लिये
जिसका आनन्द-स्वरूप सदैव 'प्रेरणा' किया ही करे
वही आदर्श साधु

* * *

जो 'वज्रादपि कठोराणि, मृदुनि कुसुमादपि'।
वज्र से भी कठोर और कुसुम से भी कोमल हो;
कहाँ वज्रता दिखाना और
कहां कोमलता का मेघ बरसाना,
इसी 'समझ' का जो सच्चा कलाधर
वही आदर्श साधु।

* * *

बाहर के त्योंही भीतर के क्लेश मात्र पर
'जय' प्राप्त करने की जिसकी प्रबल इच्छा है।
'जयमार्ग' शोधने की सम्पूर्ण जिज्ञासा है,

जीवन-प्रवाह के अवलोकन में से
दिव्य 'स्थापन' प्राप्त करने की चतुराई है।
और जो साधना को अर्पण किये हुए
अपने जीवन के गुण-दोष देखने की लगन में
जो खुद पर क्रूर होकर छाती मजबूत रखता है।
झूठी प्रतिष्ठा के 'हौवे' से डरता नहीं
और अपने में से अशक्ति के फोड़े ढूँढकर
उसपर क्रूरता से 'ऑपरेशन' करने की
जो दृढ़ता दिखाता है
वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु का जीवन
अनेक भव्य रहस्यों से भरपूर है।
उसमें अद्भुत तत्वों का महान् संग्रह है।
उसका प्रतापी आत्म-सौन्दर्य अजेय है।
प्राण में Higher Consciousness
उच्च भान को स्थापन करता है।
उच्च भावना, उच्च स्वभाव और उत्तम ग्राहक शक्ति:
जिसके आध्यात्मिक कौशल की जोड है
वही आदर्श साधु।

जैसी जिसकी अन्दर की दुनिया,
वैसी ही बाहर की दुनिया, वही आदर्श साधु।

* * *

अन्तर का बाग खिलाये विना,
या भीतर की पूर्णता प्राप्त किये विना
अथवा यह पूर्णता के पन्थ पर चले विना,
बाहर ही बबूलों में दौड़-धूप करके
जल्दी-जल्दी उपदेश देने में
अपनी रमणीयता को जो नष्ट नहीं करता है
वही आदर्श साधु।

* * *

अपने में स्वातन्त्र्य प्रकटाये विना
अपने गुलाम जीवन के विचारों की जाल में
जगज्जीवों को फँसाकर
विपरीत मार्ग में खींचने के पाप से
सदा जो मुक्त रहता है वही आदर्श-साधु।

* * *

जिसका आवास प्रायः खुले स्थल में,
पहाड़ी हवा में, पहाड़ों में, एकान्त में, हो !
पहाड़ों की प्रभुतामयी स्वतन्त्र वायु की
मिठास और ताज़गी पीकर
जिसकी आत्मा पहाड़ी-प्रचण्ड बने,
दिव्यता के दुष्कालवाले शहरों को छोड़कर
जहरीले वातावरण की दीवालों को कूद कर दूर जावे ।
और एकान्त में, गांवड़ों में, जंगलों में
पहाड़ों तथा गुफाओं के सेवन में
अपना आत्म-कल्याण जो समझता है,
वही आदर्श साधु ।

* * *

मौन……………एकान्त सृष्टि में से शान्ति और संयम का
बलवान आन्दोलन प्राप्त करता है
वही आदर्श साधु ।

* * *

या निशा सर्व भूतानां, तस्या, जागृति सँयमी ।
यस्या जागृति भूतानि, सा निशा पश्यतो मुनेः ॥
समस्त विश्व जब निद्रा-मग्न हो,
तब जो सम्पूर्ण जागृत है,

पवित्रता व अमरता का अभ्यास करके
लोक-समूह को कला-पूर्वक
कल्याण-पथ पर जो खींच ले जाय,
वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु बोले थोड़ा
किन्तु बोले तब इतना सरस और भाव-मय
कि सुनने वाले के जीवन का झङ्कार करे,
वहां, दो घड़ी ठहर जाने का दिल हो
मानों अमृतबिन्दु टपक रहे हैं-पी लें।
जीभ की बेहद मिठास से,
लोह-स्तम्भ भी पिघल जायँ,
शब्द उसके मन में जञ्जाल हैं,
जीवन उसकी दृष्टि में आकर केन्द्रस्थ हो,
और आत्मा की अकथ भाषा आंखें बोलें;
तो भी मुखसे शब्द बोलने की आवश्यकता हो
तो अनेक वाक्यों को एकही वाक्य में पूर्ण करे,
प्रत्येक शब्द को तौल-तौलकर
हृदय गुफा में एकान्त-चिन्तन से शुद्ध करके प्रकट करे,
विचार, सीधे, स्पष्ट और सादे शब्दों में व्यक्त हों,
और इतने ताजे तन्दुरुस्त और स्वतन्त्र हों
कि जो जगत् के महा पट पर रम्य उपवन सिरजे।

चारों ओर अजीब उर्वरा-शक्ति सञ्चरे,
और मरुभूमि में इसके विचारों की शक्ति से
हरी-हरी सौरभ-पूर्ण कुञ्जों की रचना हो।
इसके सौम्य, शान्त तथापि वीर्यवान आत्माकी आवाज़
बिजली के चमकारे जैसा सीधा प्रवेश करके
श्रोता के अन्तर को पलटा देवे।
और जो जीवन को गुलाबी रखने में समर्थ है,
वही आदर्श साधु।

* * *

दुःख मात्र के सामने बेलौंग फंकने की
जिनमें लबालब मस्ती भरी है।
दुःख का विनाश दुःख को भेटने में ही देखता है।
उपसर्ग मात्र के सामने छाती निकाल कर चलने का
तन्दुरुस्त खून जिनमें खल खल बह रहा है।
'प्रगति' के ही-उड़ने के प्रोग्राम रचता है,
निराशा के मुर्दे को पांव नीचे दाबकर
चारों दिशाओं से दैवी प्रेरणा के संदेश झेलता है,
और जिसके हृदय के तार सदा
आत्म-सौन्दर्य को भेटने के लिये झनझना रहे हैं
वही आदर्श साधु।

* * *

संकटों से जो भागता नहीं है,

किन्तु संकटों की शोध करता है,
मानसिक शक्ति के बल से,
संकटों पर आधिपत्य स्थापन करता है,
जगत् के विष को खूब शान्तिपूर्वक पी कर के
हंसते चहरे अमृत की ही वृष्टि करता है।
"शठं प्रति शाठ्यं कुर्यात्" के स्थान
"शठं प्रत्यपि सत्यं कुर्यात्" का मुद्रालेख लेकर
कीचड़ फेंकने पर भी पुष्प-वृष्टि करता है।
गाली देने वाले को भी आशीर्वाद देता है।
और यह सब जीवन-कला से
अपकार का बदला उपकार से देकर
अपनी 'पूर्णता' का दर्शन कराता है
वही आदर्श साधु।

* * *

सिर पर चाहे बम्ब,गोलों की बौछार होती हो,
चारों दिशाओं में प्रलयकाल की आंधी जैसे तूफान
आते हुए दीखते हों।
तेजोलेश्या फेंकने वाले 'गोशाला' के
टोले हमले करते हों, तो भी अखण्ड शान्ति
सम्पूर्ण आत्मविश्वास और सहनशीलता,
अनंत वीर्य और 'मस्तराम' की बेपरवाई से

स्वाभाविक सब चीज़ों पर स्वामित्व जमा लेवें,
और अपने चारित्र तथा प्रबल व्यक्तित्व से ही
सकल विश्व को प्रभावित करके
अपने बनाये हुए खास बगीचे में
सोलह कलाओं से जो तप रहा है,
वही आदर्श साधु।

* * *

" यद् गृहस्थानाम् भूषणम्
तत् साधूनां दूषणम् "

जो जो गृहस्थों के भूषण
उसमें ही खुदका दूषण समझता है।
दुनिया के पँचरंगी पशआराम
और आराम की इस भावना में
आत्मिक सुखकी होली समझ कर पीछा फिरता है।
समस्त जीवन; मन वचन और काया
सिर्फ साधना के लिये ही खर्चता है,
रागद्वेष या मोह माया के जाल
सदा के लिये दूर फेंक कर
आनन्द के धबकारे से अपना तेजस्वी वीर्य
आत्मा की शोधमें-सिद्ध में जो सिंचता है

वही आदर्श साधु।

✱　✱　✱

सियाला और उन्हाल
जिसको कभी धूजा नहीं सकते,
संयम का 'ओवरकोट' पहिनने के बाद
जगत की कोई भी शक्ति उसको
तिल मात्र भी हिला सकती नहीं।
ऐसा आत्म-विश्वास धारण करके
जो निर्माल्यतापूर्ण कोमलता में से निकल कर,
योद्धाकी सख्ताई सर्जते सीखा है।
जड़ का हठवाद फेंककर
चैतन्य की स्फूर्ति प्राप्त की है।
शास्त्रों के स्थूल पन्ने सदा फिराने की अपेक्षा
जो अंतर के सूक्ष्म पड़ोंको उकेलता है।
शाश्वत आराम, सत्य सुख, और सत्य प्रकाश
अंतर गुफ़ामें ही सदा ढूंढता है।
और जय की शोधवाले 'जैनत्व'का
वातावरण को पी जाने के लिये बहुत ही जो तत्पर है
वही अदर्श साधु।

✱　✱　✱

असाधारण सामर्थ्यका जो पति
शील, शौर्य, साहस, और सेवा:
इन चारों दिशाओं में विहार करता है।
जीतने वाले का धर्म क्या ! वह जानने का यत्न करे,
वही पढे,विचारे, और मनन करे:!
मन और बुद्धि का, एकाकार साधके
स्थूल बनावों के पीछे आंतरिक सृष्टि शोधता है।
आध्यात्मिक भूमिकाओं के बोलाण में पैठकर
नीचे की नक्कर भूमि की जो पहचान करे।
उसके गुह्य रहस्य समझे ,
'समझते समझते' बहते झरने की माफिक
नये नये दिव्य प्रदेश में मुसाफिरी करता है,
आगे, और आगे प्रयाण करता है,
और निरंतर, विहार जिसका
''विहार'' ही प्रिय कार्य रहे वही आदर्श साधु ।

* * *

चौदह ब्रह्मांडों को डोलाने की शक्ति

अपने में अव्यक्त रूप से छीपी हुई देखे,
मनुष्यत्वके विधान में ही
धर्मका वृक्ष विकसता निरखे।
मनुष्यत्व जैसे जैसे खिले
वैसे वैसे धर्मतत्व का प्रचार होवे।
यह समझ कर जो
बाह्यप्रवृति से हटकर आंतरप्रवृति का विशेष विस्तार करे
वही आदर्श साधु।

* * *

संस्कृतिओंका सुन्दर और पवित्र मन्दिर
वही आदर्श साधु।

* * *

साधु-धर्म के पांच महाव्रत:
प्राणातिपात विरमण, मृषावाद विरमण,
अदत्तादान विरमण, मथुन विरमण,
और परिग्रह विरमण का जो सदैव व्रत पालता है
जिसके द्वारा प्रत्येक जीवधारी जीवको

जीने का अधिकार जो स्वीकारता है,
Live & let live जीओ और जिलाओ-
उसकी निरंतर पोकार है।
प्रत्येक जीव के सुख और शान्ति के लिये
साधु खुद भी महा कष्ट उठाता है।
अहिंसा के लिये मृत्यु को भी आमँत्रण देता है,
काई जीव छोटा-या बड़ा
उसके हाथ से हनन न हो, दुसरे से हना न जाय,
हनन होते को बचाना, यही आदर्श साधु का
पहला धर्म।

* * *

'सत्य' उसके जीवन की तेजस्वी प्रभा है।
मृत्यु के आखिर समय तक
सत्याग्रह वही उसका जीवन श्वास है।
असत्य के पथ पर चलने के पहिले विनाश की इच्छा करे,
सत्य, सत्य, और सत्य
इसके विना मनुष्यत्व मैला होवे,
असत्य की छाया में भी खड़े रहने में
आत्मा की भ्रष्टता हुइ मान कर
प्रायश्चित करना यह साधुका दूसरा धर्म।

* * *

दीये बिना के दान को-वस्तु को
अपना मानकर उठा लेना-
यह साधु की कल्पना में भी नहीं है:
देवे तो लेवे, नहीं तो भूखा ही रहे।
त्यागी को 'लेने' का भी क्या ममत्व होता है ?
'देना देना'-अपनी सुगंध जीवन की
खुशबो सब को देनी-
ऐसी मनोदशा वाले को
कभी स्वप्न में भी पराई चीज खोंस लेने की
वा चुपकी से उठा लेने की वृत्ति न होती हो।
यही आदर्श साधु का तीसरा धर्म।

जिसका Noble soul प्रखर आत्मा
स्वभाव से ही ब्रह्मचर्य में रमता हो।
मन वचन काया से ब्रह्मचर्य की खूबियें
समझ कर जीवन को रंगता हो।
इन्द्रियों को संयम के चंदरवे नीचे वश रखता है।
पद्मणियां भी जिसके ब्रह्मचर्य से-
जिसकी चारित्र के चमकते तेज से
प्रभावित हो कर पीछी लौटती है!

मोह-सुन्दरी का फाट फाट उछलता यौवन
भी जिसके वीर्य को नमाने के लिये असमर्थ है।
ऐसा पुरुष साधु-धर्मके मूलसे ही,
मैथुन से निवृत्त होना है-
यही आदर्श साधु का चौथा धर्म।

* * *

निस्पृहताकी नमूनेदार मूर्तिको
कोई वस्तु पर स्पृहा न हो।
वहां वस्तु का सँग्रह-या परिग्रहका भार
उसकी उड़ती आत्मा सहन कर सकती नहीं।
अपरिग्रहव्रत (Fullness)
जिसके आत्मा की अमीरी का दर्शन है,
यही आदर्श साधुका पांचवां धर्म।

* * *

यह पांच व्रत आदर्श साधु के
पुण्यशील आत्मा की पखुडीये समान है।

* * *

आत्मा और परमात्मा की एकता
यह जिसके भाव-सामायिक का ध्येय:

बनी हुइ भूले पुनः होने न पावे
यह जिसके प्रतिक्रमण का प्रत्युत्तर;
वही आदर्श साधु।

* * *

निर्भयता की नीडर प्रतिमा
वही आदर्श साधु।

* * *

समता और निडरता जिसका नवकारमंत्र है।
और सिद्धि की साधना यह मंत्र का उद्देश्य:
इसको निरंतर स्मरण में रख कर
इस मंत्रके भीतर छीपी हुइ
प्रखर शक्ति को समझ कर
मृत सी आत्मा को संजीवनी देने वाला
इस नवकारमत्र के सतत् स्मरन से ही
प्रत्येक पद को जीवन में उतार ने से
जो सब पाप-दुःखका विनाश देखे।
और लड़ाइ झगडे या विषाद से
थके हुए आत्माका यही एक मगल
कल्याण-मंत्र समझता है,
वही आदर्श साधु

* * *

अमुक शब्दों में ही 'मुक्ति' है,
और इन्हीं मन्त्राक्षरों में ही मोक्ष है,
ऐसी संकुचित भावना को छोडकर
केवल शब्दों के 'भाव' पर से तोल निकालता है,
वही आदर्श साधु।

* * *

आध्यात्म के महंगे पदार्थ को
स्पर्श करने की लायकात
शब्दों में नहीं, किन्तु भावों में है।
अक्षरों में नहीं, किन्तु 'अंतर' में है।
अमुक शब्द या संप्रदायकी छापसे ही
मोक्ष के परवाने मिल सकते है-
इस बात से जो इन्कार करता है
वही आदर्श साधु।

* * *

जिसकी पढाई-पठन बाह्य और आंतर अभ्यास
जिगर को ताल देता हो।
प्रत्येक क्रिया या विचार को
यत्ना के रजोहरण से शुद्ध कर के
योग्य सारूप में रजू करने का मनोरथ हो।

और आध्यात्म के 'हृदय' को पाने के लिये जो
भारी से भारी मूल्य भरने को तैयार हो
वही आदर्श साधु।

* * *

जिसकी आध्यात्मिक छाया में से निकलता प्रकाश
सँसार के सोते हुए आत्मा को
मधुर कंठसे जगाता है–चेताता है।
और व्यवहारके विषमय नशे को उतार के
सबको आत्मा के अमीरस पाता है।
संसारीओं की शुष्क भूमिका में
मधुर जीवन का सिंचन करे,
और चारों दिशाओं में असीम
शांन्ति का साम्राज्य स्थापन करे वही आदर्श साधु

* * *

आदर्श साधु का युद्ध
नैतिक सिद्धान्त के लिये चलता है।
मानवता को 'देवत्व' देने के लिये
आकाश पाताल को वह बाँधता है।
पृथ्वी पर से गगन मार्ग उड़ने के लिये
आत्मा का एरोप्लेन में वह विचरता है,

आत्मबोध और आत्म 'रमणता'
उसके एरोप्लेन की दो पँख है।
सादी सरल और उन्नत भावना
उसके विमान के दो एँजिन है।
श्रद्धा, रे अटल श्रध्धा मय ज्ञान उसका
एँजिन की तेजस्वी 'सर्च लाइट' है।
ज्ञान दृष्टि और क्रियाशीलता
उसको आगे मार्ग दर्शाता है,
आत्मा की शक्ति उसके एँजिन का
धगधगता कोयला रूप है,
'वहेतीयाण' जल यह अग्नि की
'स्टीम'-भाफ रूप से आगे बढती है।
आनन्द और प्रकाश
उसके जीवन का खाना और पीना है।
अगाध मौन और विचारों के Vibrations
मौजे उसका 'वायरलेस' है।
पवित्रता और शुद्ध क्षात्र-स्वभाव का तेज
उसके विहार-मार्ग के पाटे है।
स्वार्पण उसकी गति का स्टेशन है।
तृप्ति की तुंबी यह उसकी हेन्डबेग है।
जीवित लोकों का धबकार यह
उसकी चाल का सौम्य सीटी है।

संयम की संपूर्ण ताबेदारी
यह उसका लाल झंडा है।
आशीर्वाद की अखंड पूजा
यह आदर्श साधुकी प्रगति सूचक वायु है।
मधुरता ही सिर्फ जिसका 'उपाश्रय' है।
समता और त्याग उसकी पुस्तकें है।
आत्मोंके अनंत सँस्कार
और प्रभुतामय प्रेम की भाषा,
आडँवर रहित स्पष्ट शब्द
और मौन भाषा की मूक अवाग् झँकार,
यह साधु के प्रिय सहचारी है।

* * *

जिसके चरण में सर्वस्व समर्पण करने का
आत्मा को स्वाभाविक नशा चढे, वही आदर्श साधु।

* * *

जिस निःस्पृहता पर जनवृंद वंदन करे,
सर्व विरति-सर्वथा आत्मभोग पर जहां
अर्पण होनेकी उमिएँ उठें,
वही अदर्श साधु।

* * *

मानव-स्वभाव का गहरा अभ्यासी हो कर
मनुष्य के भीतर के रहस्य को जो पहचान ले,
वही आदर्श साधु ।

* * *

आदर्श साधु के
संसर्ग से जीवन में ताजगी मिलती है।
उसकी प्रभाव की प्रबलता का अनुभव होते ही
अंतर में 'गुप्त' शक्ति की तरंगे तरंगित होती दीखे।
भीतर में सुशुप्त महाशक्ति जगे,
विग्रह के वायुमंडल में चढा हुआ मन शान्त होवे,
और निर्भयता की नींव रचाय !
जिसके शान्त मौन आगे
दुनिया के गिरिराज भी डोल सके,
आंसूकी पवित्र धारामें
शहन्शाहों की शहन्शाहत भी वह जावे।
इन आंसु के भीतर भी क्षमा और प्रेम है,
सौजन्य और मोहकता है ।
उसके मौन में भी पत्थर को भेदने की शक्ति है,
पाताल को फोड़ने की प्रचंडता है,
वज्र-हृदय को हिलाने की प्रखरता है।
और स्नेह और दया से दुःखी जन पर

मानसिक आन्दोलन-द्वारा
मलमपट्टे भी करने की कोमलता है।
जहां अनुकम्पा और आद्रता है वही आदर्श साधु।

* * *

सामान्य जनसमूह के मान का मर्दन करे ऐसा
'कुछ' उसमें भरा है, तो भी क्या है यह–
जो 'अकथनीय' है वही आदर्श साधु।

* * *

सजे हुवे शस्त्र का पानी भी उतार देवे,
ऐसे जिसके आन्तरिक शब्द है
वही आदर्श साधु।

* * *

तत्वज्ञान की बारीक से बारीक
बारीकिऐं शोध के, विचारे, मनन करे,
और जीवन में पचाने की कुशलता प्राप्त करे।
सदा समतोल वृत्ति में रह कर साधु
शान्ति और धैर्यपूर्वक ज्ञान को पचाता है।
विचारों में से निरंतर बल और चेतना पीता है,
भावनाओं में से रसिकता और संयम प्राप्त करता है।

और सरलता में से चारित्र घड़ कर,
चारित्र की रोशनी द्वारा
जगत को अंधकार में से प्रकाश की ओर
अदृश्य, या दृश्य रीति से जो ले जाता है
वही आदर्श साधु ।

* * *
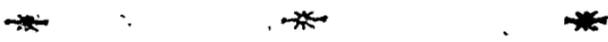
जिसका मृदु और शीतल पुण्य-स्पर्श
...र मनुष्य के " भीतर " को पलटा देवे ।
पा...ओं के दिल के दोष हर कर
शुद्ध चारीत्र की सुवास भरता है।
प्रेम की प्रति-ध्वनि से वातावरण में
प्रेम की ही प्रतिमा खडी करता है।
प्रत्येक प्रदेश को प्रेम से भिगो देवे,
व जीवन को रस से फलद्रुप बनाता है।
सुधा का सिंचन करके सुधाफल पकाता है।
और जिसके पाद-स्पर्श से ही क्लेश के करूण-स्थान भी
सुख-शांतिके मनोहर धाम बनते है, वही आदर्श साधु ।

* * *

प्रवृति में से 'निवृति' प्राप्त करके
एकांत में आत्मा को जो विकसित करे ।

'भाव' सामायिक में बराबर स्थिर रह कर
खुश्की मोहक जीवन विशेष मोहमय बनाता है।
अपनी निवृति को 'प्रमाद' में न बेचते हुए
इस निवृति को 'हजम' करना जो जानता है।
और फुरसद का सदुपयोग कर के
उस में से सुन्दर बालक-तेजस्वी तत्व को जन्म देता है।
फुरसद द्वारा स्व-स्वरूप में 'ध्यान' मग्न बनता है।
व्यवहार मात्र के "पाखँड" पर
विजय प्राप्त करने की कला को वरता है,
और इस 'कला' द्वारा 'निश्चय' नय को जानने की
जिसमे सँपूर्ण मस्ती जागी है वही आदर्श साधु।

* * *

सत्य का जो परम पुजारी, शूरवीरों की अहिंसा का उपासक
ब्रह्मचारीओंका बहादूर सरदार,
निस्परिग्रहता का जीवित आदर्शः साधु
बालक के जैसी सुन्दर सरलता धारण करता है।
और निर्दोष प्रेम का तो वह फूआरा !
क्षमा का विशाल सरोवर, और आदर्शों का आदर्शः
जिसकी प्रत्येक क्रिया में से
निखालसता और निर्दोषता का ही
दर्शन होता है वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु ने जीवन की ब्रेक (Brake) प्राप्त की है।
और उसका त्याग रोज उन्नत सीढी पर चढता है,
चढते और दौडते रास्ता भूल तो 'ब्रेक' दाबता है,
और 'भान' पूर्वक पीछा फिर कर
'मिच्छामिदुक्कडं' याच कर
पुनः सच्चे मार्ग में प्रयाण करे वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु की आंखे
शुभ दर्शी (Optimistic) होने का दावा करती है,
इससे खुद के जीवन कर्तव्य विना
दुसरे के दोष देखने की
जो बहुत कम दरकार रखता है-
वही पवित्र मूर्ति वही आदर्श साधु।

* * *

'वृत मात्र' पर जिसने
'जीत' प्राप्त करने का निश्चय किया है।
तो भी जो रोता सूरत जैसा न बनते
'हसते सिंह' जैसा बन रहा है।
भक्ति योग का बन वींध के

कर्मयोग के बगीचे की सुगंधी सूंघता सूंघता जो
ज्ञानयोग के मेरु पर खुली चक्षु से
छलंगे भर रहा है—
भरने का मनोरथ रखता है वही आदर्श साधु।

* * *

जिसकी अहिंसा-भरी दृष्टि जंगल में भी मंगल करे।
जहर का अमृत बनावे—दुश्मन का दोस्त बना दे।
और विष झरते फणीधर के शिर पर
प्रेमामृत प्रगटावे वही आदर्श साधु।

* * *

'त्याग-देव' का ही जो मंदिर,
देव और पुजारी दोनों खुद ही होवे:
प्रकृति, वेश, भावना, और जीवन,
शब्द और सब परमाणुओं में से त्याग झरता हो।
यह त्याग भीतरी खदबदाटी
या आत्म-जागृति का स्वाभाविक परिणाम होवे।
तो भी 'मैं त्यागी हुं' यह विचार मात्र से जो दूर हो!
केवल चेहरे पर से ही
त्यागका अनुपम इतिहास पढा जाता हो।
और इस इतिहास के अक्षर

पवित्र शक्ति की जैसे देखने वाले को खींचे,
आंख के इशारे से हृदय में त्याग-भाव का सिंचन करे।
शुष्क आत्मा में रसिकता और सभरता भरे।
शब्दों के आडंबर बिना, चेहरे के सुन्दर भाव से ही
दुसरे के जीवन को जो सुन्दर-त्यागी बनावे।
और जिसकी हाजरी में जीवन का अभिमान और दंभ
अपने आप गल जाय-वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु मिट्टी में से महादेव बनावे।
पत्थर में से प्रभु प्रगटावे।
मृत्यु को मारने की विद्या शिखावे,
और वासना मात्र को विनाश करके मोक्ष का पंथ बताता है।

* * *

जो अमीरदिली आगे हृदय स्वभावतः वंदना झुकाता है।
जल-तरंगों के माफिक सब को हर्ष-नृत्य कराता है।
दयापात्र नहीं, किन्तु इर्षा के पात्र बनता है,
इर्षालु को जो मीठास से ही मारता है।
इस मार में भी मधुरता टपकती हो,
और चाहने वाले में प्रभुता है वही आदर्श साधु।

* * *

अपनी अन्दर की अज्ञानता का जिसे भान है।
और-सत्य तत्व की बारीक परीक्षा है।
प्रति समय जो ' नया ' बन रहा है, और,
जीवन–महत्ता के विचार में चकचूर रहता है
वही आदर्श साधु।

* * *

आशा का अखूट खजाना होते हुए भी
जो अतृप्ति के दैत्य का विनाश कर सकता है।
सिद्धिओं को वरने के लिये संटकों की पथारी में से भी
स्वर्ग के सुख कुशलता से जो वीन सकता है।
त्रास उत्पन्न करे वैसी विषम स्थिति में भी
जो मोज से अपना ' सच्चिदानन्द ' स्वरूपकी
संपूर्ण रक्षा करता है वही आदर्श साधु।

* * *

ऊंचे उडने के पहले ' उंडाण ' में जो उतरता है।
भ[illegible] की पास पूजा कराने के बदले
प्र[illegible]र में ही अपनी क्रान्ति देखता है।
ममत्व के राक्षस को मार करके
पुरुषार्थ के वेग को उतावला बनाता है।

और समकीत के मार्ग पर मुड़ते हुए
अनेक प्रकार के वज्रमय वस्तर
सज्ज के जो दौड रहा है वही आदर्श साधु।

* * *

अपनी प्रकृति के पाये में से ही
'वचनगुप्ति' की पूरणी कर के
जीवन का मनोहर बिल्डिंग जिसने बनाया है
वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु की मानवता में से
तेजो-मय चपलता टपक रही है।
स्वतंत्रता और स्वाभाविकता का दर्शन होता है।
कुदरत के साम्राज्य में कुदरती रीत से रह कर
'मस्त' की माफिक खडखड जो हास्य करता है।
आनन्द के धक्के से जीवन-खेल
निर्दोष भाव से जो खेलता है।
हर्ष की खुमारी में नाचते हुए उसके चक्षु
सरलता और मिठाश की ठंडक देता है।
आत्मा की उन्नत स्थिति पर पहुंचते जो
प्रत्येक चीज, भाव, भावना, और कल्पना में से

निर्लेप-रूप से रस लूंटता है, वही आदर्श साधु।

* * *

साधना के पथ पर दौड़ते हुए जो
अपने 'स्थान' पर से डोलायमान होता नहीं,
अथवा अपने दिव्य-उद्यान का मजा
लोक के तराजू पर बेचता नहीं।
अपने उज्ज्वल ज्ञान को लोक और 'लोकमत' के स्मरण में
फाँका कर के नीचे गिरते देख सकता नहीं।
लोगों के तरफ की प्रशंसा में सड़ कर
सत्य ज्ञान को कभी जो छिपाता नहीं।
यह तो जीवन की प्रत्येक पल में
अपने खुद के 'भीतर' के आवाज प्रति
संपूर्ण 'वफादारी' बताने को चूकता नहीं,
वही आदर्श साधु।

* * *

अपने जीवन-कृत्यों की 'प्रमाणिक' नोंध रख कर
ग्राह्य और अग्राह्य तत्वों का विवेक जो समझता है।
भूलों को पूर्ण रूप से स्वीकार ले की 'सच्चाई' धराता है,
और अहर्निश साधना का जीवन-मंत्र जपते जपते
परायी सहाय और लौकिक मौज-मजा को

तिलांजलि देकर मस्त माफिक रहे वही आदर्श साधु।

* * *

जिनकी आध्यात्मिक 'वंसी' मे आकर्षित हो कर,
चाहे जिस धर्म के कहलाते 'नास्तिक' भी
प्रेम से भीजी हुई आंख से 'दर्शन' झेलने को आता है।
पुण्य और पाप की वेडियें वजाने के स्थान
जो सदा विजयी का धर्म क्या ? यह समझाता है।
और उसमें ही अपने 'जययुक्त' जीवन को सार्थक मानता है।
किसीके भी पास अपनी
पवित्रता और साधुता के बिगुल फूंकने से
अपने 'उत्कृष्ट मंगल' मार्ग पर चलते
आनंद की लहर से प्रमाणिक जीवन जीता है,
जी कर के, जो जीवन में से अपने आप सुगन्ध फैलाती है,
ऐसे सच्चे जो हृदय-मार्गी साधु बनता हैं, वही आदर्श साधु।

* * *

कला के भूखे आत्मा को जिसके जीवन-तट पर बैठ के
मीठी मिजमानी उड़ाने का शुभ अवसर मिले।
कृत्रिमता की नकलीयत में भूले हुए को–
संसार के संताप से दग्ध और जले हुए को
जिस नंदनवन के पास आकर के
शान्ति से विराम करने का स्वाभाविक दिल हो जावे।

इस जंगम-तीर्थ के दर्शन करने की किसीको भी
स्वाभाविक मनमें उत्कृष्ट इच्छा जागृत होवे।
मानव-हृदय के उच्च मनोरथ,
आदर्श और महत्वाकांक्षा का जहाँ पोषण होवे।
और चाहे जैसा गर्विष्ट इन्द्रभूत्यादि के गुमानी दिल में से भी
'स्वयंभू' श्रद्धा या भक्ति के
फव्वारे फूटे, वही आदर्श साधु।

* * *

दुनियां के दुःखी दर्दियों का
ऑनररी मानसिक डाक्टर वही आदर्श साधु।

* * *

बिना बूझे मन के ताप जिसको देखते सब शान्त हो जावे;
आत्मा के, बिना खीले संस्कार
आदर्श साधु को देखते ही खील उठे।
निरस हृदयों में भी पुष्पों की शय्या बीछावे।
उकलती दुनिया के शिर पर
सुवासित जीवन की शीतलता बरसावे।
और अपनी स्वतंत्र नासीका तैयार कर के
नन्दनवन की वायु में से जो सुगन्ध लूटे।
और लेशमात्र भी आवेश या लागणी से न दोराते हुवे

ठण्डे कलेजे से औरोचित उदार भावना से
प्रत्येक प्रश्न को शान्ति से विचारे–वही आदर्श साधु॥

* * *

आदर्श साधु की तपश्चर्या,
उसकी बिखरी हुई शक्ति को एकत्रित करती हैं।
आत्म-शक्ति का पुँज जमाती है,
प्रकृति के सब हथियार: मन शरीर प्राण और बुद्धि
ये सब आत्मा के सिद्धान्त को स्वीकारते है,
और निश्चय रूपसे समझते है कि-
"तप से मन की समृद्धि बढने न पावे तो
तप यह केवल ढोंग मात्र ही है"।
उसकी तपश्चर्या विविध कर्म के बल को क्षय करती है।
मूल प्रकृति की तीक्ष्णता काटती है।
स्वभाव को रेशम जैसा मुलायम और
पुष्प सम सुगन्धी बनाता है।
आत्मा को आनन्द मय कोमलता अर्पता है।
और मक्खन जैसी मुलायम बनी हुई जीवान में से
जिसकी तपश्चर्या मधुर वचन ही निकालती है,
वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु के 'धर्म' का अर्थ
' गुणस्थान-क्रमारोहण ' होवे ।
आत्मा की उर्ध्व-गति जिनमें से देख सके।
हृदय के गुणोंका विकास जिनका ' नूर ' बढाता हो ।
चित्त के व्यापार समतोल-वृति रख सकते हो ।
और सम्यक्-ज्ञान, दर्शन और चारित्र का
निरन्तर स्मरण रख कर उस में से जो
दिव्य जीवन का आविष्कार करे-वही आदर्श साधु ।

* * *

संसार से विरक्ति लेकर-
द्रव्य और भाव से सम्पूर्ण निवृति लेकर,
संसार के विकारों से भी ' पर ' होकर,
अखण्ड ' कर्मयोगी ' वत् जो
नवीन 'अवतार' और नवीन 'जीवन' का घाट घडता है ।
आत्मा की शोध में अविश्रान्त रूप से गति करे,
निवृत्ति-मार्ग से 'पुरुषार्थ' की प्रवृति साध कर
दिव्यता व, स्वतंत्रता को वरनेका उत्सुक जो
वही आदर्श साधु ।

* * *

जो ज्ञान-मार्ग के तेजीले पथ पर
जिंदगी का शान्त और निराडम्बरी आश्रम स्थापे,
संसार के सब प्रभाव से दूर रह कर
सब प्रभाव को ही अपने में से जन्म देवे।
उसकी 'व्यापक' ज्ञान-दृष्टि में से फूटते
किरण से अनेक कल्याण-बाग खिलते रहे,
दोस्ती या दुश्मनी के कीचड से हाथ धोकर
समभाव-पूर्ण नजर से विश्वके
सब मनुष्य और तिर्यंच के साथ
समान व्यवहार रख सकता है वही आदर्श साधु।

* * *

अंतर के सोये हुवे तत्व को जो हिलाकर जगाता है,
जगाने को दौडती क्रिया का बारीक अवलोकन करता है,
जगाने वाला और जागने वाला-उभय का
एकत्व समझ कर प्रेरणा किया ही करे, पिया ही करे।
आप अपना ही चौकीदार बनकर
खुद के विचार और वर्तन पर सम्पूर्ण काबू प्राप्त करता है।
और जो खुद ही खुद का बादशाह और
खुद को रैयत समझ कर आत्म-प्रदेश पर शान्ति से
चक्रवर्ति पद भोगता है-वही आदर्श साधु।

* * *

अप्रमत वन के दशों दिशा में से जो अभय बना है।
पढने से ज्यादा विचारने में विशेषता समझता है।
'शिक्षा वचन' देने की अपेक्षा
सँस्कार जगाने में सिद्धि देखता है।
और बोलने से मौन में शक्ति के शस्त्र भरे हुवे देखता है
वही आदर्श साधु।

* * *

मानवता के मोजे जिसकी साधुता को
सोनेरी रंग से शोभा देवे,
समता की लहरिएं जिसके 'मुखचन्द्र' पर छाकर
जीवन की गहराई और भव्यता का सुन्दर ख्याल देवे.
और मुक्ति के पिपासुओं का जो मज़बूत
'तीरण तारण' सफरी जहाज है
ऐसा देखते ही निर्णय होवे, वही आदर्श साधु।

* * *

आत्म-स्वमान की गौरवस्मृति, दुनियाकी
कीर्ति या अपमान के टुकडे दुनिया पर फेंक देवे।
पदवीएं जिसको भार रूप लागे,
हुए भी उसको 'फूलफूल' [illegible] प्रतीत [illegible]

दरिये जैसा दिलावर दिल में से ज्ञानकी सुवास बीछा कर
अपने मनोमन्दिर को पवित्र करे।
सब दुनियां सुवासित बने वैसी सरस सुगंध भरता है।
शुष्क हृदय में 'चैतन्य' उभरावे,
फिजूल धामधूम जिनको पसँद नहीं।
इससे 'मान' में फुलावे नहीं, कि
'अपमान' में कुमलावे नहीं।
ऐसा 'आनन्दघन' जीवन जो बीतावे वही आदर्श साधु।

* * *

संसार के मोह, अज्ञान, अंधकार निकाल कर जो,
अपना मधुर शीतल ज्ञान-वारी जगत पर बरसाता है।
रस से तरातर कर के निर्बलों को भी प्राण के प्रसाद देवे
और विश्वव्यापी स्नेह के 'झूले' पर जो
सारी दुनिया को झुलाता है-वही आदर्श साधु।

* * *

अनुभव की एरण पर मढ़ाया हुआ
यह महान् योद्धा है।
दुनियाँ की कठोर ठोकरें खाते हुए भी
उन ठोकरों की 'स्मृति ज़हर' दूर किये हैं।
आंखों के दृष्टि-पात से जो मनुष्य का अंतर को नाप लेता है

विचार और भावना से ही पात्रता को पिछानता है।
ज्ञान और अज्ञान के स्पष्ट भेद समझता है।
कर्म और उसके फल का 'जागृत' भान रखता है।
वीतराग के मार्ग की छोटी और बड़ी
माहिती के लिये कोशीश करे,
और अपनी हाजेरी से बने हुए शुभ कार्यों में
जो खुद को 'निमित्त मात्र' ही समझता है
वृत्ति मात्र को क्षणिक तरंग मान के
वृत्तिओं की तरफ हास्य करता है।
और मिथ्याभिमान की काली वादलिओं को
अपने जीवन-प्रदेश में आती अटकाने के लिये
जो सतत् चौकी कर सकता है-वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु,
जीवन की प्रत्येक पल में से सौन्दर्य शोधता है।
प्रत्येक स्थिति में से पवित्रता का निचोड़ लाता है।
अहर्निश मानसिक व्यायाम करके
उसमें से धर्म का अखण्ड प्रवाह बहावे।
और जिसके पातरे में मनुष्यत्व के विकास की
अनेक गुप्त चावियें पड़ी हों। वही आदर्श साधु।

* * *

जिनको अपना वीर्य निष्फल और
निष्प्रयोजन तुच्छ युद्ध पीछे खर्चना पोसाता नहीं,
भीतर के 'कुरुक्षेत्र' पर विजय प्राप्त करने को
जिन याहोश सैनिक को झूझते थकान लगे नहीं,
अपनी सहाय के लिये जो
किसी बाहिरी तत्व की आशा में ठगाता नहीं,
किन्तु आदर्श साधु
भीतर के देवत्व पर अवलंबित रहता है।
अपने को ही शान्ति का निवास-स्थान मान के
खुद को और दुनिया को गति-गरमी देवे।
और जो अपने आत्मीय उष्म शौक को विकसित करके
संसार के अनेक तुच्छ देखावों के सामने
मंह जगा करके स्वतंत्रता से विचरता है।
स्वतंत्र विचर कर जो जीवन में सदा नया जल लाता है,
जीवन के प्रत्येक श्वास को अपनी
अद्भुत् जीवन-कला से सुगंधमय बनाता है।
भीतर की गड़बड़ को सदा शांति का ही संदेश देता है।
और अपने दोषमय जीवन को शुद्ध करने वाली
गर्मी जिनकी ठण्डी आंखों में से स्फुरती दीखे-
यही लोखण्डी इच्छा-शक्ति का समुद्र-आदर्श साधु
प्रत्येक छालक में महान् परिवर्त्तन कर सकता है।

एकान्त-दृष्टि छोड़ के
अनेकान्त दृष्टि से–स्याद्वाद की शैली से जो
प्रत्येक वस्तु के गुण दोष धैर्यपूर्वक तपासता है।
विवेक के चश्मे से वह वस्तु जो बराबर देखता है,
और 'निदिध्यासन' में अपनी जिंदगी के
अमूल्य समय को जो खर्चता है वही आदर्श साधु।
ऐसे आदर्श साधु ज्ञान की गंभीर गीता है,
अकल ऐश्वर्य, और प्रेम की परिसीमा है,
जागृति की ज्वाला जैसा उसका 'जीवनः'
और 'चेतना' की बाफ जैसे परमाणुः
प्रत्येक पद पर कर्तव्य-बोध देता है,
धर्मसूत्रों के सच्चे रहस्य की भेट धरता है,
और निष्काम कर्मकी लगन लगावे।
महत्ता के संस्कारी उपदेश की धुन जगावे।
'ज्ञान' और 'क्रिया' का समन्वय कर के
भीतर की चेतन-चिनगारी से जो
अनाथ हृदय को सनाथ बनाकर सजीवन करता है।
मूर्छित अंतःकरण को जगाता है, वही आदर्श साधु।

* * *

जिसकी मधुर आत्मीय बंसरी
जगत में अद्भुत् संगीत का स्रोत बहावे।

बन्द हुए हृदय के द्वारोंको खुलावे।
सोते हुए आत्मा को जगाता है।
और मानव-जन्म का सच्चा आशय और कर्तव्य समझ कर
आत्मिक सुदम भवनों का संशोधन करे।
और तत्व-ज्ञान की 'खाख' पचाने के लिये जो,
आत्मा के मल और बुद्धि की विभ्रमता को
हटाने वाला जुलाब ले सकता है, वही आदर्श साधु।

आदर्श साधु अपना स्फटिक सम उज्वल जीवन
धर्म श्रोताओं के लिये सदैव
दर्पण के माफ़िक खुला रखता है।
अपने जीवन की निर्मलता और विचारों की
विशुद्धिता देखने का
सब कोई के अधिकार मंजूर रखता है।
और जीवन जैसा हो, वैसे ही स्वरूप में
बिना आडंबर रजु करने की प्रमाणिकता दर्शाता है।
क्लेश कंकास, वहेम और शँका की बेडी तोडता है।
और अपने भीतर से ही
स्वशकित से ही 'स्वातंत्र्य' को शोधके
अपने में प्रकटाता है, प्राप्त करता है।
'स्वातंत्र्य' को अपने में समा करके,

जीवित मुक्ति जो साधता है।
भीतर की गुलामी के कंटक दूर कर के
'स्वातंत्र्य' के गुलाब के पौधे उछेरता है।
गुलाब को उछेरते जो
गुलाब के कंटक प्रेम से सहन करता है;
"बिना कंटक का गुलाब होता नहीं,
और बिना दुःख स्वातंत्र्य होवे नहीं"।
यह जिनकी मज़बूत मान्यता है।
"कंटक से गभरायगा, वह गुलाब को सूँघ सकता नहीं,
दुःखों से जो भागेगा, वह मुक्ति को प्राप्त कर सकेगा नहीं"
इस सिद्धान्त पर जो गुलाब को भेंट ने के लिये दौड़ता है।
और होजरी की सब शक्ति से
'स्वातंत्र्य' को अपने में पचाना जानता है,
वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु में, काजल की कोटड़ी में घुस करके
श्वेत मुख पीछी फिरने का जीवित कौशल है।
अग्नी की ज्वलंत भट्टी में जो वासना की आहुति अर्पता है,
और अलख की शोध के लिये
अपने प्रत्येक आत्म-प्रदेश को अलख बनाता है-
वही आदर्श साधु!

* * *

संन्यास का जामा पहिन कर
जो मन से, अंतर से सन्यासी बने।
वेष या शिर-मुण्डन की किया ही बस नहीं।
किन्तु 'अलख' हाथ करने के लिये
सर्व जीवन-प्रवाह से, विकार से, जो 'अलख' हो जावे।
दुनियाँ के विषँवाद से खुद को उठा कर
अपने चित्त को आंतरामिमुख बनावे।
कफनी या भेख जिसके जीवन से भिन्न नहीं है।
प्रत्येक भावना में भेख की प्रतिछाया गिरती हो।
और वैराग्य जिसके प्रत्येक रोमांच में है, वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु के आवागमन में प्रफुल्लता की प्रतिध्वनि होती है
हृदय में भूतकाल की पुनित स्मृति,
वर्तमान की ज्वलंत प्रभा,
और भविष्य की मोहक कल्पना उठती है।

* * *

सम्यकत्व के ऊँचे शिखर पर जो चढ रहा है,
भीतर के देव की अगम्य लिपी निरंतर पढता है,
ज्ञान की पवित्रता समझ कर संकटों को विंधनेवाला
क्षात्र-नुर जिसमें झलक रहा है।

रसास्वाद रहित खानपान को स्वीकारता है।
विशुद्ध और बिलकुल सादे जीवन के स्वरुप में
यह 'निजानंदी' के प्राण डोलते होवे।
प्रत्येक जीव में अपना दर्शन करता है।
और "शिवमस्तु सर्व जगत:"
सब जगत का कल्याण होवे–
ऐसी अहर्निश भावना भावे- वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु आत्म प्रशंसा की इच्छा मात्र करता नहीं,
कल्पना में भी परनिन्दा का बगदे को संग्रह करता नहीं,
आगे-पीछे की तुच्छ प्रवृत्ति में कान धरता नहीं,
और विचार में गहरी दृष्टिका समावेश करता है।
ऐसे पुरुषों के जीवन की यात्रा में जाने का
देवों को भी आकर्षण होवे-वही आदर्श साधु।

* * *

'एक को नमावे, वह सब को नमाता है'।
आदर्श साधु का यह जपमंत्र है।
एक ही, आत्मा को जीतने से
समग्र सृष्टि को वह हरा सकता है।
तपश्चर्या कर के ही फल की कमाई करता है।

भव्य स्वप्न सेवन करना और साक्षात्कार करना,
यह उसकी मंगल प्रवृत्ति है।
शान्ति की माया वह चाहता नहीं,
या मृत्यु-सूचक शान्ति को स्पर्श करता नहीं!
युद्ध-आत्मयुद्ध और विजय
और उस विजय के फल-स्वरूप चिरकाल की शान्तिः
ऐसी शान्ति का जो परम पुजारी है वही आदर्श साधु।

* * *
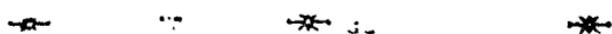
पामरता और-तुच्छता के सामने
आदर्श साधु का जीवन लाल दीपक के समान है।

* * *

जिसकी आत्मा का उल्लास
अपने हृदय को गुदगुदी करके हँसाता हो,
अपने अनुभव और जीवन के चालू कार्य के बीच भेद न हो
उपदेश और जीवन के बीच अन्तर नहीं।
इससे विचार जैसा वर्तन होता है,
और जैसे बाहर के दर्शन, वैसे ही
भीतर के उज्वल देव हो-वही आदर्श साधु।

* * *

शौर्य का खड्ग खेल सके वैसे सिद्धान्त,
और सिद्धान्त के पीछे जीवन जिसका अर्पण है।
कर्तव्य मार्गपर प्रचण्ड उदारता व तीव्रता धारण कर के
जो कर्तव्य की सफलता प्राप्त करता है वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु, जीवन को नव-दीक्षा ही देनेवाले
शास्त्रों के प्रमाण स्वीकारता है।
आत्मा की शान्ति के देश में आत्मकलह उपजाता नहीं,
'दीक्षा' शब्द का अंतर-रहस्य तपासता है।
प्रत्येक शब्द के ऊँडे मर्म समझने का प्रयास करता है,
सिद्धान्त के गर्भ में से सत्वका निचोड़ निकालता है।
और शब्दों के बाह्य रूप-रंग पर से
तत्व-निर्णय कर डालने का लड़कपन-
तुच्छता के भयंकर मिथ्यात्व को निकालता हैं।
द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के रंग को पहिचानता है,
और अंशमात्र भी तामस के तवे में बिना तपे
कलह कुसंप का दावानल बिना प्रगटाये,
प्रगटे हुए को भी बुझाकर
जो अपना शान्त सुवासित जीवन-धर्म बजाता है,
जीवन को सिर्फ गति ही देता है-दिव्य प्रेरणा पाता है,

अन्धकार में से निकाल कर प्रकाश में खींचता है,
यही जिसका धर्म, धर्म के सूत्र
और यही जिसकी धार्मिक क्रिया
वही आदर्श साधु।

* * *

जहां धर्म- शुद्ध धर्म की देशना–उपदेश होवे
वहां आदि, मध्य या अंतमें क्लेश होता नहीं।
ऐसा समझ के जो 'अपने' को सच्ची दीक्षा देवें
वही आदर्श साधु।

* * *

जिसकी विद्वता तर्कवाद में बेडोल बनती नहीं,
लोगों को खुश करने के लिये नर्तक की कोटिमें
उतरती नहीं।
सत्याभास या धर्माभास में,
अपने धर्म स्वरुप को नाश होने देता नहीं,
जगत् और रूढ़ि नचावे वैसा नाचता नहीं,
और जो अपनी उच्च भूमिका पर खडा रह के
अपनी ' भूमि–स्थान' का गौरव समझकर
अपने ' मध्य-बिन्दु ' से लेशमात्र भी चलीत होता नहीं,

वज्र की दिवाल जैसे मजबूत रह के
दुनिया के विकार-घावों को कुंठित कर देवे वही आदर्श साधु

* * *

जिसका " चैतन्य " कभी सोता नहीं,
वही आदर्श साधु ।

* * *

दांव-पेंच से या बुद्धिवाद के भार से
धर्म के मिथ्या वकवाद से या ऊपर ऊपर के आडम्बर से
जनता में " पूज्य " बनने के तोफान के स्थान
भीतर के वृत्त को विकसित करने के लिये
आदर्श साधु सदा प्रयाण करे,
जीवन की शुद्ध-कला में शक्ति प्राप्त करे,
धीरज और विवेक को ऐसे विकसित करे
कि किसी से भी चलित न हो सके ।
और जिसके तप विद्या और चरित्र की जोड
नम्रता से पूर्ण ज्ञानदृष्टि में मिल जावे,
वही आदर्श साधु ।

* * *

आदर्श साधु धर्म का उपदेश ही 'सदा' करने के स्थान

अपना जीवन ही धर्ममय बनावे।
जिसका जीवन ही धर्म की भाषा बनता हो
जीवन ही नीति का अखण्ड प्रवाह हो।
शब्दों के नीरस टुकड़े धर्म के पवित्र नाम नीचे
सस्ते बना के जगत् में
नास्तिकवाद का प्रचार करने के स्थान
जिस में शब्दों की पवित्रता और
धर्मसूत्रों का मूल्य आंकने की
संपूर्ण सद्‌बुद्धि भरी हो वही आदर्श साधु।

* * *

जिस संत पुरुष के चारित्र-श्रवण से
'श्रावक' का मन बलवान बने।
जीवन आशामय और तेजस्वी हो।
सबल और प्रभावशील आंदोलन आसपास लहर जावे
मानव-धर्म के सच्चे उपासक होने की भक्ति जागे,
और जिस की साधना की ज्योत
खुदको और पर को उज्वल सत्य के प्रदेश में ले जावे,
वही आदर्श साधु।

* * *

जिसका ज्ञान

अभिमान के बादल पर उड़ता नहीं,
या वाद-विवाद की गटर में सड़ता नहीं
मात्र मगज को विद्या से भरता नहीं,
किन्तु अपनी आंखें ज्ञानमय-प्रकाशमय बनाता है,
हृदय व वर्त्तन में ज्ञान की सुवासना का प्रचार करता है
अप्रसिद्धि में ही गौरव मानता है।
और दुःख से तप-तप के शुद्ध होने का प्रयास करता है।
'शुद्धाशय' की राह पर धीमे किन्तु
अविश्रान्त रूप से श्रम करता है।
भूले हुवे मार्ग का "मिथ्या दुष्कृत" लेकर
आदर्श-साधुत्व के द्वार में प्रवेशता है
वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु
आत्म-सुधारना के लिये ही शास्त्र पढ़ता है।
'परोपकाराय सतां विभूतयः'
परोपकार करने के लिये ही अंतर की कला सीखता है
नयन-कमल किसी अगम्य के चिंतन में
नीचे नम रहे हों।
और मृत्यु की चिन्ता छोड कर जो
धर्म और जीवन के प्रत्येक ताने बाने में बुना रहे।

जगत में सहानुभूति की शोध में रखड़ने से
अपनी मजबूताई जो सिद्ध करता है।
सहानुभूति लेने की अपेक्षा देने में ही आनन्द माने।
और सच्चा कर्तव्य बुरे अन्त में समाता नहीं,
उच्च विचार खोटे कर्तव्य में खींचते नहीं।
प्रभुमय जीवन व्यतीत करने वाले को कोई भी
अंश मात्र तकलीफ दे सकता नहीं।
और अपनी शान्ति में कोई भी अशान्ति का
आरोपण कर सकता नहीं!
ऐसा पक्का विश्वास करके
आत्मानंद की मधुरी गोष्ठियें ही
श्रोताओं को सुनाने में जो रत है वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु के हाथ में
भय को जीतने की चाबियें हैं।
उद्वेग को विस्मृत करने का सामर्थ्य है।

कल्लोलता-मय स्मित, मोक्ष की सुहावनी आशा
और सुनहरे स्वप्न की जिसको भेंट है।
निर्मलता और विशालता-समभावमयता

उसका उभय समय का प्रतिक्रमण है।
और हँसते हँसते ही जीना और हँसते हँसते ही मरना
यह जिसका परम पच्चखाण है, वही आदर्श साधु।

* * *

आत्मवंचना की काली बादलियें
आदर्श साधु के जीवन प्रदेश में आती ही नहीं,
पाखण्ड या अभिमान के जहरी पवन
उस की सीमा को भी स्पर्श कर सकता नहीं।
चँचल तरंगों को जो देश-निर्वासन सुनाता है,
और इच्छित प्राप्त करने के लिये जो
अपना तपोबल विकसित करता है-वही आदर्श साधु।

पापी को नहीं, किन्तु-पाप मय मनोदशा को धिक्कारता है
जिसके धिक्कार में भी प्रेम हो।
जिसके धिक्कार में से भी स्नेह झरता हो।
इस स्नेह की शीतलता ऐसी प्रबल हो
कि पाप की अग्नि को बुझा देवे।
इस प्रेम का बरफ ऐसा हो कि
पापी के अंतर को भी पिघाल देवे।

* * *

आध्यात्मिक युद्ध और जिन्दगी: दोनों
आदर्श साधु का एक ही स्वरूप है।

अडग धैर्य और सहनशीलता
ये आदर्श साधु के आभूषण है।
' मैं ' के स्थान पर ' अपन '
यह उसके ' व्यापक ' ज्ञान का गौरव है।
और जिसके जहां जहां पांव गिरे वहां वहां
कल्याण-कारी और प्रतिभाशाली वातावरण खडा होता है
यही आदर्श साधु की महान पहिचान है।

* * *

खुशामद का मीठे जहर,
आदर्श साधु के साधुत्व को मार सकता नहीं।
गालियों की बरसात
उसके व्यक्तित्व को हनन कर सकती नहीं।
आराम की मुलायम गद्दी में सुला कर
इस योद्धा का जीवन अपहरन नहीं किया जा सकता।
और उसको कंटक का मुकुट पहिना कर
एक भी अश्रु आंख से-गिरा सकते नहीं।
यह तो समभाव से सहनेवाला
महाभिग्रही आदर्श सा:

आशा और हर्ष के संदेश ही उसकी मुखाकृति में भरे हैं।
और प्रगति और पवित्रता के पाठ
जिसके-जीवन पृष्ठ में पड़े हैं वही आदर्श साधु।

* * *

असामान्य जीवन-लीला यह उसका इतिहास है।
अद्भुत जीवन-बाग यह उसके विचरने की भूगोल है।
प्रतापी आत्मा का तेज यह जिसका "हीप्नोटीज़म" है

और अनँत ज्ञान दर्शन और चारित्र का
जो खुदको स्वामी माने वही आदर्श साधु।

सच्चा साधु वैराग्य के नाम पर कंगालता को सर्जता नहीं।
अहिंसा के नाम कायरता का संग्रह करता नहीं।
'आध्यात्मिकता' के नाम "बगुला वृत्ति" को पोषता नहीं,
और प्रभु के नाम पाखण्ड को पूजता नहीं

* * *

आदर्श साधु निष्क्रिय-जीवन में से निकल कर
क्रियाकारक 'सामायिक' में रमण करता हैं।

स्थिति-चूस्नता में से खुद को हटा कर
झरने के माफिक वहता है।

अगाध शान्ति में से जो दिव्यता की
गहरी आवाज झेलता है।
कुदरत के तत्वों से भरपूर अपने आदर्श जीवन में से ही
युगांतर तक पढ़ा जावे वैसे शास्त्रों को जन्माता है।
दिखावट-बाह्य दिखावट जिनकी प्रकृति में हीं नही है।
भीतर भीतर का गुप्त-प्रस्थान
यह जिसका चढ़ता आत्मा का प्रवाह है वही आदर्श साधु

आदर्श साधु अभिमान से नहीं, -तुच्छता से नहीं,
किन्तु भव्य भावना से खुद को भव्यता का अधिकारी माने

और जिसके आत्मा के निर्मल संस्कार,
पवित्र भावना और विशुद्ध मनोदशा:
उसकी गैरहाजिरी में भी वातावरण में रमते हों।
हवा के प्रत्येक अणु में जीवित रहता हो।

* * *

जिसको किसी स्थान पर खिंचाने का न हो,
किन्तु अपने साधु-जीवन की प्रतिभा
वीरता, पवित्रता, शक्ति और आत्मा की मोहिनी ही
जगत् को अपनी तरफ खींचती हो,

वही आदर्श साधु।

* * *

जिसके पांवकी रज भी दुनिया को
सच्चा देव-मन्दिर बनावे ऐसी पवित्र है।
और जिसके, साधु-जीवन की समाप्ति
सब जगत को रंजन करे।
वर्तमान को छिपावे, और भूत के पट पर
अनेक सुखद और मीठी यादगीरियों की
लकीरें करता जावे।
और जगत् की रोतल सूरत पर
आनंद की मधुरी फरफर उड़ाता जावे वही आदर्श साधु

* * *

आत्मबल जिसके मोक्ष का प्रथम साधन है।
नियमों का पालन यह जिसके
मोक्ष के चढ़ते उतरते पगथिये हैं।
और निश्चित 'ध्येय' पर पहुंचने के लिये जिसका
"मौन मंथन करना," यही अचल ध्यान है
वही आदर्श साधु।

* * *

ऐसा आदर्श साधु आत्मा-परमात्मा के दीर्घ चिंतन में
बाहिरी सकल जंजालों को त्यज कर
भीतर में डूब जाता है।
रसमय तत्वज्ञान में मस्त रहता है।
अनंत के साथ संपूर्ण तादात्म्य साधता है।
और तेज तेज, और तेजमय होकर
सिद्धशिला में बैठे हुए
सिद्धों के प्रकाश में जाकर मिल जाता है।
प्रकाश में प्रकाश होकर प्रकाशता है।
और अन्त में सिद्ध-आत्मा बनता है
वही आदर्श साधु वन्दनीय है! वन्दनीय है!

* * *

अनंत शक्ति की शोध में जो आत्मा
अहर्निश परमात्मा बनने के लिये भ्रमण करता है।
प्रत्येक पल पल शान्ति का रेकोर्ड रखता है।
प्रत्येक क्षण की सच्ची शान्ति की जोड़ करता है।
चेतन और प्रकाश के विमान पर उड़ता है।
ज्ञान और दर्शन के तेज से तपता है।
और कल्याण-भाव की अमृत प्याली पी करके
सर्वत्र कल्याण की ही वर्षा बरसा कर

आकाश मार्ग में आनन्द से उड़ जाता है
वही आदर्श साधु।

* * *

आदर्श साधु ! यह तो आकाशी पत्ती !
गगन में विचरता पंखवाला विद्याधर।
ऐसे का जन्म जगत् को उज्वल बनावे।
ऐसी आत्मा का स्पर्श मात्र ही
पृथ्वी को पावन करे ! धन्य है !

* * *

धन्य है ! धन्य है !
जिनने ऐसे दिव्य साधु के भव्य दर्शन किये हैं।
उनको भी धन्यवाद है।
सकल जगत् ऐसे पवित्र व
पुण्यशाली के तप-तेज पर ही जी रहा है।
उनके समागम के लिये ही
आज और हमेश जगत का जाप चालू है।
सुनोजी ! सुनो ! दूर दूर से आवाज आ रही है।
साधु की सात्विक आत्मा में से
वे संगीत-सुर सुनाई पड़ते हैं......

झेलो, झेलो, जितना झेल सको उतना झेलो।

" शिवमस्तु सर्व जगतः"

सकल जगतका कल्याण हो! कल्याण हो!

सुंदरम्। सुख दायी!

कल्याणम्,

कल्याणम्!

ॐ अर्हम्।

क्या पढ़ोगे ?

लेखकः श्री बंसी की अन्य पुस्तकें।

आदर्श जैनः-

सच्चा जैन कैसा होना चा
इसका अनुभव करानेवा
हिंदी संसार में यही एक अनोखी किताब है: मूल्य ४ अ

आदर्श श्राविकाः-

सच्ची श्राविका व
सुन्दर स्वरूप:
जरूर पढीये।